श्री पुष्पदंतनाथ विधान

माण्डला

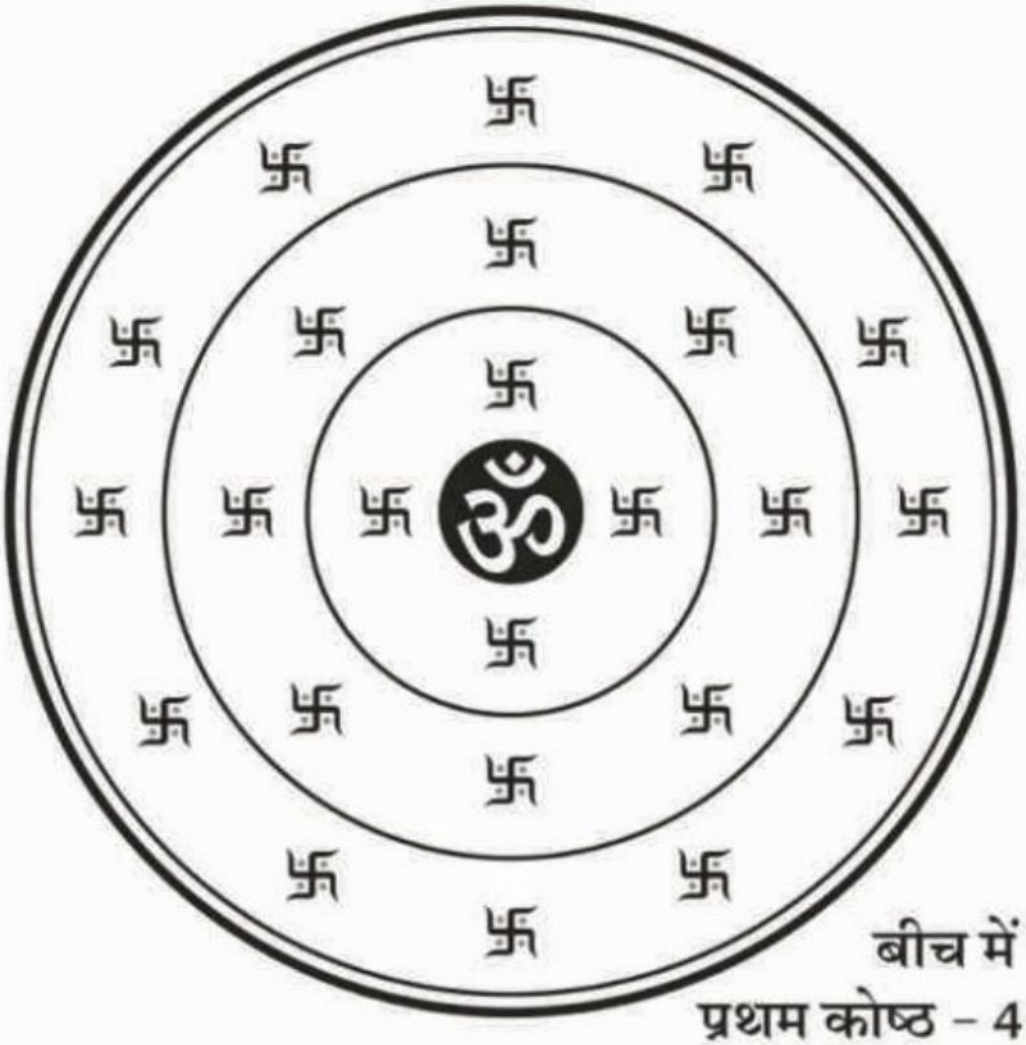

बीच में - ॐ
प्रथम कोष्ठ - 4 अर्घ्य
द्वितीय कोष्ठ - 8 अर्घ्य
तृतीय कोष्ठ - 12 अर्घ्य
कुल - 24 अर्घ्य

रचयिता :

प. पू. आचार्य विशदसागर जी महाराज

श्री पुष्पदंतनाथ स्तवन

दोहा - सुविधि बताए मोक्ष की, पुष्पदन्त भगवान।
जिनका हम करते यहाँ, भाव सहित गुणगान।।

सोलह कारण भव्य भावना, पूर्व भवों में भाए हैं।
पावन तीर्थंकर प्रकृति शुभ, पुष्पदन्त जी पाए हैं।।
गर्भ जन्म तप ज्ञान मोक्ष शुभ, पंचकल्याणक प्रगटाए।
कर्म नाशकर अपने सारे, मोक्ष महापद को पाए।।1।।
मोक्षमार्ग के राही पावन, होकर किए जगत कल्याण।
रत्नत्रय को पाने वाले, पाए आप अलौकिक ज्ञान।।
द्वादश तप को तपने वाले, किए निर्जरा भली प्रकार।
अन्तर्बाह्य परिग्रह त्यागी, होके आप परम अनगार।।2।।
ज्ञान ध्यान तप लीन जिनेश्वर, कर्म घातिया किए विनाश।
ज्ञान दर्शनानन्त वीर्य सुख, का भी प्रभु जी किए प्रकाश।।
समवशरण की रचना करके, इन्द्र किए प्रभु की जयकार।
तीन योग से प्रभु के चरणों, वन्दन कीन्हे बारम्बार।।3।।
प्रभु की दिव्य देशना पावन, ॐकारमय रही महान।।
श्रद्धा ज्ञानाचरण प्राप्त कर, मोक्षमार्ग पर करें गमन।
ऐसे शिव दर्शायक प्रभुपद, करते हम सम्यक अर्चन।।4।।

दोहा - जिनकी महिमा का करें, सुर नर मुनि गुणगान।
तिनकी अर्चा कर विशद, पाएँ शिव सोपान।।

(पुष्पांजलिं क्षिपते)

श्री पुष्पदंत विधान

स्थापना

दोहा - पुष्पदंत भगवान का, सुविधिनाथ भी नाम।
आह्वानन् करते हृदय, करके चरण प्रणाम।।

ॐ ह्रीं श्री पुष्पदन्त जिनेन्द्र ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणं।

(रेखता छन्द)

क्षीर सम देते नीर चढ़ाय, रोग जन्मादिक मम नश जाय।
सुविधि जिन की अर्चा शुभकार, करे जो पाए भवदधि पार।।1।।

ॐ ह्रीं श्री पुष्पदंत जिनेन्द्राय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

चढ़ाने लाए गंध बनाय, भवातप पूर्ण नाश हो जाय।
सुविधि जिन की अर्चा शुभकार, करे जो पाए भवदधि पार।।2।।

ॐ ह्रीं श्री पुष्पदंत जिनेन्द्राय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

धवल अक्षत से पूज रचाय, सुपद अक्षत हमको मिल जाय।
सुविधि जिन की अर्चा शुभकार, करे जो पाए भवदधि पार।।3।।

ॐ ह्रीं श्री पुष्पदंत जिनेन्द्राय अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

पुष्प सुरभित यह दिए चढ़ाय, काम रुज पूर्ण नाश हो जाए।
सुविधि जिन की अर्चा शुभकार, करे जो पाए भवदधि पार।।4।।

ॐ ह्रीं श्री पुष्पदंत जिनेन्द्राय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

सुचरु के लाए थाल भराय, क्षुधा रुज मेरा भी नश जाय।
सुविधि जिन की अर्चा शुभकार, करे जो पाए भवदधि पार।।5।।

ॐ ह्रीं श्री पुष्पदंत जिनेन्द्राय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दीप यह घृत का लिया जलाय, मोहतम नाश पूर्ण हो जाय।
सुविधि जिन की अर्चा शुभकार, करे जो पाए भवदधि पार।।6।।

ॐ ह्रीं श्री पुष्पदंत जिनेन्द्राय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

धूप यह लाए सुगन्धीवान, कर्म नश पाएँ शिव सोपान।
सुविधि जिन की अर्चा शुभकार, करे जो पाए भवदधि पार।।7।।

ॐ ह्रीं श्री पुष्पदंत जिनेन्द्राय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

सरस फल चढ़ा रहे हम आज, मोक्ष पद का पाने साम्राज्य।
सुविधि जिन की अर्चा शुभकार, करे जो पाए भवदधि पार।।8।।

ॐ ह्रीं श्री पुष्पदंत जिनेन्द्राय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

विशद यह चढ़ा रहे हम अर्घ्य, प्राप्त हो हमको सुपद अनर्घ्य।
सुविधि जिन की अर्चा शुभकार, करे जो पाए भवदधि पार।।9।।

ॐ ह्रीं श्री पुष्पदंत जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सोरठा- देते शांती धार, शांती पाने के लिए।
कर दो यह उपकार, हमको भी निज सम करो।।

(शान्तये शान्तिधारा)

सोरठा- हे त्रिभुवन पति ईश !, पुष्पांजलि करते चरण।
पाएँ यह आशीष, शिव पद के राही बने।।

।। पुष्पांजलिं क्षिपेत् ।।

पंचकल्याणक के अर्घ्य

फागुन वदि नौमि कहाए, प्रभु सुविधि गर्भ में आए।
हम जिन महिमा को गाएँ, पद सादर शीश झुकाएँ।।1।।

ॐ ह्रीं फाल्गुनकृष्णा नवम्यां गर्भकल्याणक प्राप्त श्री पुष्पदंत जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अगहन सुदि एकम पाए, सुर जन्म कल्याण मनाए।
हम जिन महिमा को गाएँ, पद सादर शीश झुकाएँ।।2।।

ॐ ह्रीं अगहन शुक्लाप्रतिपदायां जन्मकल्याणक प्राप्त श्री पुष्पदंत जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अगहन सुदि एकम जानो, प्रभु दीक्षा धारे मानो।
हम जिन महिमा को गाएँ, पद सादर शीश झुकाएँ।।3।।

ॐ ह्रीं अगहन शुक्लाप्रतिपदायां दीक्षाकल्याणक प्राप्त श्री पुष्पदंत जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कार्तिक सुदि दोज बताई, प्रभु जी ने दीक्षा पाई।
हम जिन महिमा को गाएँ, पद सादर शीश झुकाएँ।।4।।

ॐ ह्रीं कार्तिकशुक्ला द्वितीयायां केवलज्ञानकल्याणक प्राप्त श्री पुष्पदंत जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भादों सुदि आठें स्वामी, प्रभु हुए मोक्ष पथगामी।
हम जिन महिमा को गाएँ, पद सादर शीश झुकाएँ।।5।।

ॐ ह्रीं भाद्रपदशुक्लाऽष्टम्यां मोक्षकल्याणक प्राप्त श्री पुष्पदंत जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा - सुविधि बताए मोक्ष की, पाए केवल ज्ञान।
जयमाला गाते यहाँ, करते हम यशगान।।

(चाल छन्द)

प्रभु प्राणत स्वर्ग से आए, काकन्दी धन्य बनाए।
तीर्थंकर पदवी धारी, इस जग में मंगलकारी।।1।।
जब गर्भ में प्रभु जी आए, सुर रत्न वृष्टि करवाए।
जन्मोत्सव इन्द्र मनाए, मेरू पे न्हवन कराए।।2।।
हैं मगर सुलक्षण धारी, तन श्वेत रंग मनहारी।
लख पूर्व दो आयू पाई, सौ धनुष रही ऊँचाई।।3।।
युवराज सुपद को पाए, कई वर्षों राज्य चलाए।
प्रभु उल्का पतन निहारे, संयम के भाव विचारे।।4।।
प्रभु शाल वृक्ष तल आए, दीक्षाधर ध्यान लगाए।
फिर घाती कर्म नशाए, प्रभु केवल ज्ञान जगाए।।5।।
सुर समवशरण बनवाए, वसु योजन का बतलाए।
गणधर अठासि बतलाए, गणि नायक प्रथम कहलाए।।6।।
प्रभु सुप्रभ कूट पे आए, सम्मेद शिखर कहलाए।
भादों सुदि आठें जानो, शिव पदवी पाए मानो।।7।।

दोहा - मंगलमय मंगल कहे, आप त्रिलोकी नाथ।
अर्चा करते भाव से, चरण झुकाते माथ।।

ॐ ह्रीं श्री पुष्पदंत जिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- नाथ ! आपकी भक्ति से, मिला हमें आधार।
'विशद' मोक्ष पद का मिले, हमको प्रभु उपहार।।

।। पुष्पांजलिं क्षिपेत् ।।

प्रथम वलय:

दोहा- चउ संज्ञाएँ जीव को, करें सतत् बेहाल।
किए नाश जिन पद नमन, मेरा विशद त्रिकाल।।

(पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

चतु: संज्ञा विनाशक जिन के अर्घ्य

(शम्भू छन्द)

रत्नत्रय के धारी जिनवर, करते केवल ज्ञान प्रकाश।
आहार संज्ञा का विनाशकर, करते हैं शिवपुर में वास।।1।।

ॐ ह्रीं आहारसंज्ञा रहित श्री पुष्पदंत जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

निर्भय होके करें साधना, सप्त भयों का करें विनाश।
केवल ज्ञान प्रकट करके जिन, सिद्ध शिला पर करें निवास।।2।।

ॐ ह्रीं भयसंज्ञा रहित श्री पुष्पदंत जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

कामबली पर विजय प्राप्त कर, मैथुन संज्ञा किए विनाश।
कर्म घातिया नाश किए जिन, पाए हैं शिव पद में वास।।3।।

ॐ ह्रीं मैथुन संज्ञा रहित श्री पुष्पदंत जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

बाह्याभ्यंतर रहा परिग्रह, पूर्ण रूप से करके त्याग।
परिग्रह संज्ञा नाश किए प्रभु, चेतन गुण में धर अनुराग।।4।।

ॐ ह्रीं परिग्रह संज्ञा रहित श्री पुष्पदंत जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

दोहा - चउ संज्ञाएँ नाशकर, हुए असंज्ञ जिनेश।
जिनकी अर्चा भाव से, करते यहाँ विशेष।।5।।

ॐ ह्रीं चतुः संज्ञा नाशक श्री पुष्पदंत जिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं निर्व. स्वाहा।

द्वितिय वलयः

दोहा - अष्ट कर्म का नाश कर, पाए शिव सोपान।
गुण पाने जिन सिद्ध के, करते हम गुणगान।।

(पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

अष्ट कर्म निवारक जिन के अर्घ्य

(पद्धरि छन्द)

प्रभु ज्ञानावरणी कर्मनाश, फिर करें ज्ञान केवल प्रकाश।
जिन पुष्पदन्त जग में महान, हम पूज रहे जिन पद प्रधान।।1।।

ॐ ह्रीं ज्ञानावरणी कर्म रहित अनंत ज्ञान युक्त श्री पुष्पदंत जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिन कर्म दर्शनावरण नाश, प्रभु करें दर्श क्षायिक प्रकाश।
जिन पुष्पदन्त जग में महान, हम पूज रहे जिन पद प्रधान।।2।।

ॐ ह्रीं दर्शनावरण कर्म रहित अनंत दर्शन युक्त श्री पुष्पदंत जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जब करें वेदनीय का विनाश, गुण अव्याबाध में करें वास।
जिन पुष्पदन्त जग में महान, हम पूज रहे जिन पद प्रधान।।3।।

ॐ ह्रीं वेदनीय कर्म रहित अव्याबाध गुण युक्त श्री पुष्पदंत जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु मोह कर्म से रहे हीन, जो सुखानन्त में रहें लीन।
जिन पुष्पदन्त जग में महान, हम पूज रहे जिन पद प्रधान।।4।।

ॐ ह्रीं मोहनीय कर्म रहित अनंत सुख युक्त श्री पुष्पदंत जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिन आयु कर्म का कर विनाश, अवगाहन गुण में करें वास।
जिन पुष्पदन्त जग में महान, हम पूज रहे जिन पद प्रधान।।5।।

ॐ ह्रीं आयु कर्म रहित अवगाहनत्व गुण युक्त श्री पुष्पदंत जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु नाम कर्म करते विनाश, सूक्ष्मत्व सुगुण करते प्रकाश।
जिन पुष्पदन्त जग में महान, हम पूज रहे जिन पद प्रधान।।6।।

ॐ ह्रीं नाम कर्म रहित सूक्ष्मत्व गुण युक्त श्री पुष्पदंत जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ना गोत्र कर्म का रहा काम, गुण पाए अगुरु-लघु रहा नाम।
जिन पुष्पदन्त जग में महान, हम पूज रहे जिन पद प्रधान।।7।।

ॐ ह्रीं गोत्र कर्म रहित अगुरु-लघुत्व गुण युक्त श्री पुष्पदंत जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु अन्तराय करके विनाश, जिन वीर्यानन्त में करें वास।
जिन पुष्पदन्त जग में महान, हम पूज रहे जिन पद प्रधान।।8।।

ॐ ह्रीं अन्तराय कर्म रहित अनंतवीर्य युक्त श्री पुष्पदंत जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा - अष्ट कर्म को नाशकर, पाए शिवपुर वास।
अर्चा करते हम यहाँ, होवे पूरी आस।।

ॐ ह्रीं अष्ट कर्म रहित अष्ट गुण युत श्री पुष्पदंत जिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तृतिय वलयः

दोहा - द्वादश तप धारी हुए, पुष्पदन्त भगवान।
कर्म निर्जरा कर विशद, पाएँ पद निर्वाण।।

(पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

द्वादश तप के अर्घ्य

(सखी छन्द)

जिनने अनशन तप धारा, वे त्याग करें आहारा।
हम सुविधिनाथ को ध्याते, पद सादर शीश झुकाते।।1।।

ॐ ह्रीं अनशन तप धारक श्री पुष्पदंत जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

तप ऊनोदर के धारी, होते हैं अल्पाहारी।
हम सुविधिनाथ को ध्याते, पद सादर शीश झुकाते।।2।।

ॐ ह्रीं ऊनोदर तप धारक श्री पुष्पदंत जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

तप व्रत संख्यान के धारी, संकल्प करें अनगारी।
हम सुविधिनाथ को ध्याते, पद सादर शीश झुकाते।।3।।

ॐ ह्रीं व्रत परिसंख्यान तप धारक श्री पुष्पदंत जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रस त्याग सुतप के धारी, जो छोड़ें हो अविकारी।
हम सुविधिनाथ को ध्याते, पद सादर शीश झुकाते।।4।।

ॐ ह्रीं रस परित्याग तप धारक श्री पुष्पदंत जिनेन्द्राय
अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तप विविक्त शैय्यासनधारी, हों अनाशक्त अनगारी।
हम सुविधिनाथ को ध्याते, पद सादर शीश झुकाते।।5।।

ॐ ह्रीं विविक्त शैय्यासन तप धारक श्री पुष्पदंत जिनेन्द्राय
अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तप कायोत्सर्ग के धारी, तजते ममत्व गुणधारी।
हम सुविधिनाथ को ध्याते, पद सादर शीश झुकाते।।6।।

ॐ ह्रीं कायोत्सर्ग तप धारक श्री पुष्पदंत जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

तप प्रायश्चित जो पाते, वे अपने दोष नशाते।
हम सुविधिनाथ को ध्याते, पद सादर शीश झुकाते।।7।।

ॐ ह्रीं प्रायश्चित तप धारक श्री पुष्पदंत जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

जिन विनय सुतप के धारी, इस जग में मंगलकारी।
हम सुविधिनाथ को ध्याते, पद सादर शीश झुकाते।।8।।

ॐ ह्रीं विनय तप धारक श्री पुष्पदंत जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

तप वैय्यावृत्ती धारें, वे संयम रत्न सम्हारें।
हम सुविधिनाथ को ध्याते, पद सादर शीश झुकाते।।9।।

ॐ ह्रीं वैय्यावृत्ति तप धारक श्री पुष्पदंत जिनेन्द्राय
अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तप स्वाध्याय के धारी, चिन्तन करते अनगारी।
हम सुविधिनाथ को ध्याते, पद सादर शीश झुकाते।।10।।

ॐ ह्रीं स्वाध्याय तप धारक श्री पुष्पदंत जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

व्युत्सर्ग सुतप जो पावें, वे तन से नेह घटावें।
हम सुविधिनाथ को ध्याते, पद सादर शीश झुकाते।।11।।

ॐ ह्रीं व्युत्सर्ग तप धारक श्री पुष्पदंत जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

हैं ध्यान सुतप के धारी, चिन्ता रोधी अविकारी।
हम सुविधिनाथ को ध्याते, पद सादर शीश झुकाते।।12।।

ॐ ह्रीं ध्यान तप धारक श्री पुष्पदंत जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

यह द्वादश तप जो पावें, वे अपने कर्म नशावें।
हम सुविधिनाथ को ध्याते, पद सादर शीश झुकाते।।13।।

ॐ ह्रीं द्वादश तप धारक श्री पुष्पदंत जिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं निर्व. स्वाहा।

जाप्य :- ॐ ह्रीं श्री पुष्पदंत जिनेन्द्राय नमः मम सर्व कार्य सिद्धिं कुरु कुरु स्वाहा।

जयमाला

दोहा - दिव्य देशना दे प्रभू, जग को किए निहाल।
भाव सहित जिनकी यहाँ, गाते हैं जयमाल।।

(वीर छन्द)

पुष्पदन्त जिनराज आज हम, द्वार आपके आये हैं।
पूजा सुविधि रचाकर हमने, तुमरे गुण प्रभु गाये हैं।।
तुम्हें छोड़ किसको देखे, किसको पाएँ इस जगती पर।
हो आप अलौकिक दुनियाँ में, प्रभु हृदय बसाएँ जगती पर।।

दर्श किया जिस पल हे भगवन् !, उस पल अति आनन्द मिला।
हृदय सरोवर में उस पल शुभ, भक्ती रस का सुमन खिला।।
पुष्पदन्त जिनराज आपका, जिन मन्दिर में वास रहा।
हृदय बनेगा मंदिर उसका, जो प्रभु पद का दास रहा।।
तुम हो सुख के सागर भगवन्, अक्षय सौख्य प्रदान करो।
भक्त आपके आस लगाएँ, अक्षय सुख का दान करो।।
अहो जिनालय ! अहो जिनेश्वर !, पावन श्रेष्ठ कहाते हैं।
अतः चित्त से प्रमुदित होकर, जिन महिमा को गाते हैं।।
चैत्यालय ही सिद्धालय का, पथ दर्शाने वाला है।
चिदानन्द चिन्मय शुभ चेतन, कृतकृत्य बनाने वाला है।।
पाप राशि भव-भव से संचित, क्षण में भस्म हुआ करती।
पुष्पदन्त जिनराज की भक्ती, भव-भव के दुख को हरती।।
जिनबिम्ब अचेतन होकर भी, जीवों को वांछित फल देते।
जो पूज रहे हैं भक्ती से, उनके सब संकट हर लेते।।
जय-जय जिनदेव अमंगल हर, जग में मंगल करने वाले।
जय 'विशद' ज्ञान के ईश आप, सब दोषों को हरने वाले।।

दोहा - पुष्पदंत भगवान हैं, जग के पालन हार।
हम को भी आशीष दो, जाएँ भव से पार।

ॐ ह्रीं श्री पुष्पदंत जिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा - पुष्पांजलि करते यहाँ, पाने भव का कूल।
यही भावना है विशद, होवें सब अनुकूल।।

।। पुष्पांजलिं क्षिपेत् ।।

श्री पुष्पदंत चालीसा

दोहा - अर्हत् सिद्धागम धरम, आचार्योपाध्याय संत।
जिन मंदिर जिनबिम्ब को, नमन अनन्तानंत।।
कुन्द पुष्प सम रूप शुभ, पुष्पदन्त है नाम।
चरण-कमल द्वय में विशद, बारम्बार प्रणाम।।

चौपाई

जय-जय पुष्पदन्त जिन स्वामी, करुणानिधि हे अन्तर्यामी।।1।।
तुम हो सब देवों के देवा, इन्द्र करें तव पद की सेवा।।2।।
महिमा है इस जग से न्यारी, सारी जगती बनी पुजारी।।3।।
महिमा सारा जग ये गाए, पद में सादर शीश झुकाए।।4।।
प्राणत स्वर्ग से चयकर आए, काकन्दी नगरी कहलाए।।5।।
पिता श्री सुग्रीव कहाए, माताश्री जयरामा पाए।।6।।
फाल्गुन कृष्ण नौमी कहलाए, मूल नक्षत्र गर्भ में आए।।7।।
प्रातः काल का समय बताए, इक्ष्वाकु कुल नन्दन गाए।।8।।
मगसिर शुक्ला एकम जानो, प्रभु ने जन्म लिया यह मानो।।9।।
मगर चिन्ह प्रभु का बतलाया, इन्द्रों ने पद शीश झुकाया।।10।।
धवल रंग प्रभु जी शुभ पाए, धनुष एक सौ ऊँचे गाए।।11।।
उल्कापात देख के स्वामी, बने आप मुक्ती पथगामी।।12।।
मगसिर कृष्णा एकम पाए, अनुराधा नक्षत्र कहाए।।13।।
अपरान्ह् काल दीक्षा का गाया, तृतिय भक्त प्रभु ने पाया।।14।।
दीक्षा वृक्ष पुष्प कहलाए, शाल वृक्ष तल ध्यान लगाए।।15।।

सहस्र भूप संग दीक्षा पाए, निज आतम का ध्यान लगाए।।16।।
कार्तिक शुक्ला तीज बखानी, हुए प्रभु जी केवलज्ञानी।।17।।
काकन्दी नगरी फिर आए, अक्षतरु वन पुष्प कहाए।।18।।
समवशरण वसु योजन पाए, सुन्दर आके देव रचाए।।19।।
एक महीने पूर्व से स्वामी, योग निरोध किए जगनामी।।20।।
यक्ष आपका ब्रह्म कहाए, काली श्रेष्ठ यक्षणी पाए।।21।।
गणधर आप अठासी पाए, उनमें नाग प्रथम कहलाए।।22।।
आयू लाख पूर्व दो पाए, चार वर्ष छद्मस्थ बिताए।।23।।
सर्व ऋषी दो लाख बताए, समवशरण में प्रभु के गाए।।24।।
घोषा प्रथम आर्यिका जानो, छियालिस गुण के धारी मानो।।25।।
गिरि सम्मेद शिखर पर आए, निज आतम का ध्यान लगाए।।26।।
सुप्रभ कूट रहा शुभकारी, हरा भरा जो है मनहारी।।27।।
भादों शुक्ल अष्टमी जानो, एक हजार मुनि संग मानो।।28।।
मूल नक्षत्र प्रभु जी पाए, अपराह्न काल में मोक्ष सिधाए।।29।।
शुक्रारिष्ट ग्रह जिन्हें सताए, पुष्पदंत प्रभु को वह ध्याये।।30।।
पूजा और विधान रचाए, भावसहित चालीसा गाए।।31।।
करे आरती मंगलकारी, शुक्रवार के दिन मनहारी।।32।।
जीवन में सुख-शांति पावे, भक्त भाव से जो गुण गावे।।33।।
प्रभु की महिमा रही निराली, है सौभाग्य जगाने वाली।।34।।
महिमा सुनकर के हम आए, भाव सुमन अपने उर लाए।।35।।
कृपा करो तुम हे त्रिपुरारी, रोग शोक भय कष्ट निवारी।।36।।
मम जीवन हो मंगलकारी, विघ्न व्याधि नश जाए हमारी।।37।।

तव प्रतिमा के दर्शन पाएँ, हर्ष-हर्ष करके गुण गाएँ।।38।।
पद में सादर शीश झुकाएँ, अपने सारे कर्म नशाएँ।।39।।
भव सिन्धू से मुक्ति पाएँ, हम भी अब शिव पदवी पाएँ।।40।।

दोहा - चालीसा चालीस दिन, पढ़े भाव के साथ।
सुख-शांती आनन्द पा, बने श्री के नाथ।।
विधि सहित पूजा करें, करके 'विशद' विधान।
पाते हैं सौभाग्य वह, अन्त में हो निर्वाण।।

प्रायश्चित पाठ

तर्ज - दिन रात मेरे.....

अपराध क्षम्म होवें, आशीष विशद पाएँ।
सब दोष दूर करने, जिन पद में सिर झुकाएँ।।1।।
तन से वचन से मन से, अपराध जो किए हैं।
कृत कारितानुमत से, दुख क्लेश जो दिए हैं।।2।।
चारों कषाय करके, स्वभाव को भुलाया।
आलस प्रमाद द्वारा, जीवों को बहु सताया।।3।।
भोजन शयन गमन में, कई पाप बन्ध कीन्हें।
अज्ञान भाव द्वारा, पर को जो कष्ट दीन्हें।।4।।
दिन रात हम से क्षण-क्षण अपराध हो रहे हैं।
कर्मों के बोझ से दब, पापों को ढो रहे हैं।।5।।
जिन देव गुरु शरण में, प्रायश्चित्त लेने आए।
मुक्ती श्री को पाके, भव रोग विनश जाएँ।।6।।